आगमिक गच्छ/प्राचीन त्रिस्तुतिक गच्छ
का
संक्षिप्त इतिहास

डा० शिव प्रसाद

पूर्वमध्यकाल में श्वेताम्बर श्रमणसंघ का विभिन्न गच्छों और उपगच्छों में विभाजन जैन धर्म के इतिहास की एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना है। चन्द्रकुल (बाद में चन्द्रगच्छ) से अनेक छोटी-बड़ी शाखाओं (गच्छों) का प्रादुर्भाव हुआ और ये शाखायें पुनः कई उप-शाखाओं में विभाजित हुईं। चन्द्रकुल की एक शाखा (वडगच्छ/बृहद्गच्छ) के नाम से प्रसिद्ध हुई। वडगच्छ से वि०सं० ११४९ में पूर्णिमागच्छ का प्रादुर्भाव हुआ और पूर्णिमागच्छ की एक शाखा वि० सं० की १३वीं शती से आगमिकगच्छ के नाम से प्रसिद्ध हुई।

पूर्णिमागच्छ के प्रवर्तक आचार्य चन्द्रप्रभसूरि के शिष्य आचार्य शीलगुणसूरि इस गच्छ के आदिम आचार्य माने जाते हैं। इस गच्छ में यशोभद्रसूरि, सर्वाणंदसूरि, विजयसिंहसूरि, अमरसिंहसूरि, हेमरत्नसूरि, अमररत्नसूरि, सोमप्रभसूरि, आणंदप्रभसूरि, मुनिरत्नसूरि, आनन्दरत्नसूरि आदि कई विद्वान् एवं प्रभावक आचार्य हुए हैं, जिन्होंने अपने साहित्यिक और धार्मिक क्रियाकलापों से श्वेताम्बर श्रमणसंघ को जीवन्त बनाये रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रदान की।

पूर्णिमागच्छीय आचार्य शीलगुणसूरि और उनके शिष्य देवभद्रसूरि द्वारा जीवदयाणं तक का शक्रस्तव और ६७ अक्षरों का परमेष्ठीमन्त्र, तीन स्तुति से देववन्दन आदि बातों में आगमपक्ष के समर्थन से वि०सं० १२१४ या १२५० में आगमिकगच्छ अपरनाम त्रिस्तुतिकमत का प्रादुर्भाव हुआ।[1]

आगमिक गच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिये साहित्यिक और अभिलेखीय दोनों प्रकार के साक्ष्य उपलब्ध हैं। साहित्यिक साक्ष्यों के अन्तर्गत इस गच्छ के आचार्यों द्वारा लिखित ग्रन्थों की प्रशस्तियों तथा इस गच्छ और इसकी शाखाओं की पट्टावलियों का उल्लेख किया जा सकता है। अभिलेखीय साक्ष्यों के अन्तर्गत इस गच्छ के आचार्यों / मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित जिन प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों को रखा गया है, इनकी संख्या सवा दो सौ के आसपास है।

पट्टावलियों द्वारा इस गच्छ की दो शाखाओं—धंधूकीया और विडालंबीया का पता चलता है।

आगमिकगच्छ और उसकी शाखाओं की पट्टावलियों की तालिका इस प्रकार है—

---

१. नाहटा, अगरचन्द—"जैन श्रमणों के गच्छों पर संक्षिप्त प्रकाश" यतीन्द्रसूरिअभिनन्दनग्रन्थ (आहोर, १९५८ ई०) पृष्ठ १३५-१६५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	पट्टावली का नाम	रचनाकार	संभावित तिथि	संदर्भ ग्रन्थ
१.	आगमिकगच्छपट्टावली	अज्ञात	१३वीं शती लगभग	विविधगच्छीयपट्टावली-संग्रह-संपा० जिनविजय पृष्ठ ९-१२
२.	आगमिकगच्छपट्टावली	अज्ञात	१६वीं शती लगभग	जैनगूर्जरकविओ, भाग ३, परिशिष्ट, संपा० मोहनलाल दलीचंद देसाई पृष्ठ २२२४-२२३२
३.	धंधूकीया शाखा की पट्टावली	अज्ञात	१७वीं शती लगभग	वही, पृष्ठ २२३२
४.	विडालंबीया शाखा की पट्टावली	अज्ञात	१८वीं शती लगभग	वही पृष्ठ २२३३
५.	आगमिकगच्छ-पट्टावली	मुनिसागरसूरि	१६वीं शती लगभग	पट्टावलीसमुच्चय, भाग२ १५८-१६२ जैनसत्यप्रकाश वर्ष ६, अंक ४ जैन परम्परानो इतिहास भाग-२, पृष्ठ ५४०-५४२ विविधगच्छीयपट्टावली-संग्रह, पृष्ठ २३४-२३५
६.	धंधूकीयाशाखा की पट्टावली	अज्ञात	१७वीं शती लगभग	विविधगच्छीयपट्टावली-संग्रह, पृष्ठ २३५-२३६

उक्त तालिका की प्रथम पट्टावली में आगमिकगच्छ के प्रवर्तक आचार्य शीलगुणसूरि का पूर्णिमागच्छीय आचार्य चन्द्रप्रभसूरि के शिष्य के रूप में उल्लेख है। इसके अतिरिक्त इस पट्टावली से आगमिकगच्छ के इतिहास के बारे में कोई सूचना नहीं मिलती है।

तालिका में प्रदर्शित अंतिम दोनों पट्टावलियाँ आगमिक गच्छ के प्रकटकर्ता शीलगुणसूरि से प्रारम्भ होती हैं। ये पट्टावलियाँ इस प्रकार हैं :—

मुनिसागरसूरि द्वारा रचित आगमिकगच्छपट्टावली में उल्लिखित

गुरु परम्परा की सूची

शीलगुणसूरि [आगमिकगच्छ के प्रवर्तक]
|
देवभद्रसूरि
|
धर्मघोषसूरि
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यशोभद्रसूरि
|
सर्वाणंदसूरि
|
अभयदेवसूरि
|
वज्रसेनसूरि
|
जिनचन्द्रसूरि
|
हेमसिंहसूरि
|
रत्नाकरसूरि
|
विजयसिंहसूरि
|
गुणसमुद्रसूरि
|
अभयसिंहसूरि
|
सोमतिलकसूरि
|
सोमचन्द्रसूरि
|
गुणरत्नसूरि
|
मुनिसिंहसूरि
|
शीलरत्नसूरि
|
आणंदप्रभसूरि
|
मुनिरत्नसूरि
|
मुनिसागरसूरि [पट्टावली के लेखक]

तालिका में क्रमाङ्क ६ पर प्रदर्शित आगमिकगच्छ (घंघूकीयाशाखा) की पट्टावली में उल्लिखित गुरु-परम्परा की सूची

शीलगुणसूरि
|
देवभद्रसूरि
|
धर्मघोषसूरि
|
यशोभद्रसूरि
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

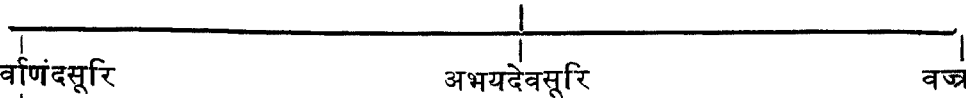

जिनचन्द्रसूरि
विजयसिंहसूरि
अभयसिंहसूरि
अमरसिंहसूरि
हेमरत्नसूरि
अमररत्नसूरि
सोमरत्नसूरि
गुणनिधानसूरि
उदयरत्नसूरि
सौभाग्यसुन्दरसूरि
धर्मरत्नसूरि
मेघरत्नसूरि

जैसा कि स्पष्ट है, उक्त दोनों पट्टावलियां आगमिकगच्छ के प्रकटकर्ता शीलगुणसूरि से प्रारम्भ होती हैं। इसमें प्रारम्भ के ४ आचार्यों के नाम भी समान हैं, अतः इस समय तक शाखाभेद नहीं हुआ था, ऐसा माना जा सकता है। आगे यशोभद्रसूरि के तीन शिष्यों—सर्वाणंदसूरि, अभयदेवसूरि और वज्रसेनसूरि को पट्टावलीकार मुनिसागरसूरि ने एक सीधे क्रम में रखा है वहीं धंधूकीया शाखा की पट्टावली में उन्हें यशोभद्रसूरि का शिष्य बतलाया गया है। सर्वाणंदसूरि की शिष्यपरम्परा में जिनचन्द्रसूरि हुए, शेष दो आचार्यों अभयदेवसूरि और वज्रसेनसूरि की शिष्यपरम्परा आगे नहीं चली। जिनचन्द्रसूरि के शिष्य विजयसिंहसूरि का दोनों पट्टावलियों में समान रूप से उल्लेख है। पट्टावलीकार मुनिसागरसूरि ने जिनचन्द्रसूरि के दो अन्य शिष्यों हेमसिंहसूरि और रत्नाकरसूरि का भी उल्लेख किया है, परन्तु उनकी परम्परा आगे नहीं चली। विजयसिंहसूरि के शिष्य अभयसिंहसूरि का नाम भी दोनों पट्टावलियों में समान रूप से मिलता है। अभयसिंहसूरि के दो शिष्यों—अमरसिंहसूरि और सोमतिलकसूरि से यह गच्छ दो शाखाओं में विभाजित हो गया। अमरसिंहसूरि की शिष्यसन्तति आगे चलकर धन्धूकीया शाखा और सोमतिलकसूरि की शिष्यपरम्परा विडालंबीया शाखा के नाम से जानी गयी। यह उल्लेखनीय है कि प्रतिमालेखों में कहीं भी इन शाखाओं का उल्लेख नहीं हुआ है, वहाँ सर्वत्र केवल आगमिकगच्छ का ही उल्लेख है, किन्तु कुछ प्रशस्तियों में स्पष्ट रूप से इन शाखाओं का नाम मिलता है तथा दोनों शाखाओं की पट्टावलियाँ तो स्वतन्त्र रूप से मिलती ही हैं, जिनकी प्रारम्भ में चर्चा की जा चुकी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभयसिंहसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित एक जिनप्रतिमा पर वि० सं० १४२१ का लेख उत्कीर्ण है, अतः यह माना जा सकता है कि वि० सं० १४२१ के पश्चात् अर्थात् १५वीं शती के मध्य के आसपास यह गच्छ दो शाखाओं में विभाजित हुआ होगा।

चूँकि इस गच्छ के इतिहास से सम्बद्ध जो भी साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्य उपलब्ध हैं, वे १५वीं शती के पूर्व के नहीं हैं और इस समय तक यह गच्छ दो शाखाओं में विभाजित हो चुका था अतः इन दोनों शाखाओं का ही अध्ययन कर पाना सम्भव है। शीलगुणसूरि तक के ८ पट्टधर आचार्यों में केवल अभयसिंहसूरि का ही वि० सं० १४२१ के एक प्रतिमा लेख में प्रतिमा प्रतिष्ठापक के रूप में उल्लेख है। शेष ७ आचार्यों के बारे में मात्र पट्टावलियों से ही न्यूनाधिक सूचनायें प्राप्त होती हैं, अन्य साक्ष्यों से नहीं। लगभग २०० वर्षों की अवधि में किसी गच्छ में ८ पट्टधर आचार्यों का होना असम्भव नहीं लगता, अतः आगमिक गच्छ के विभाजन के पूर्व इन पट्टावलियों की सूचना को स्वीकार करने में कोई बाधा नहीं है।

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है अभयसिंहसूरि के पश्चात् उनके शिष्यों अमरसिंहसूरि और सोमतिलकसूरि की शिष्यसन्तति आगे चलकर क्रमशः धन्धूकीयाशाखा और विडालंबीयाशाखा के नाम से जानी गयी, यह बात निम्नप्रदर्शित तालिका से स्पष्ट होती है—

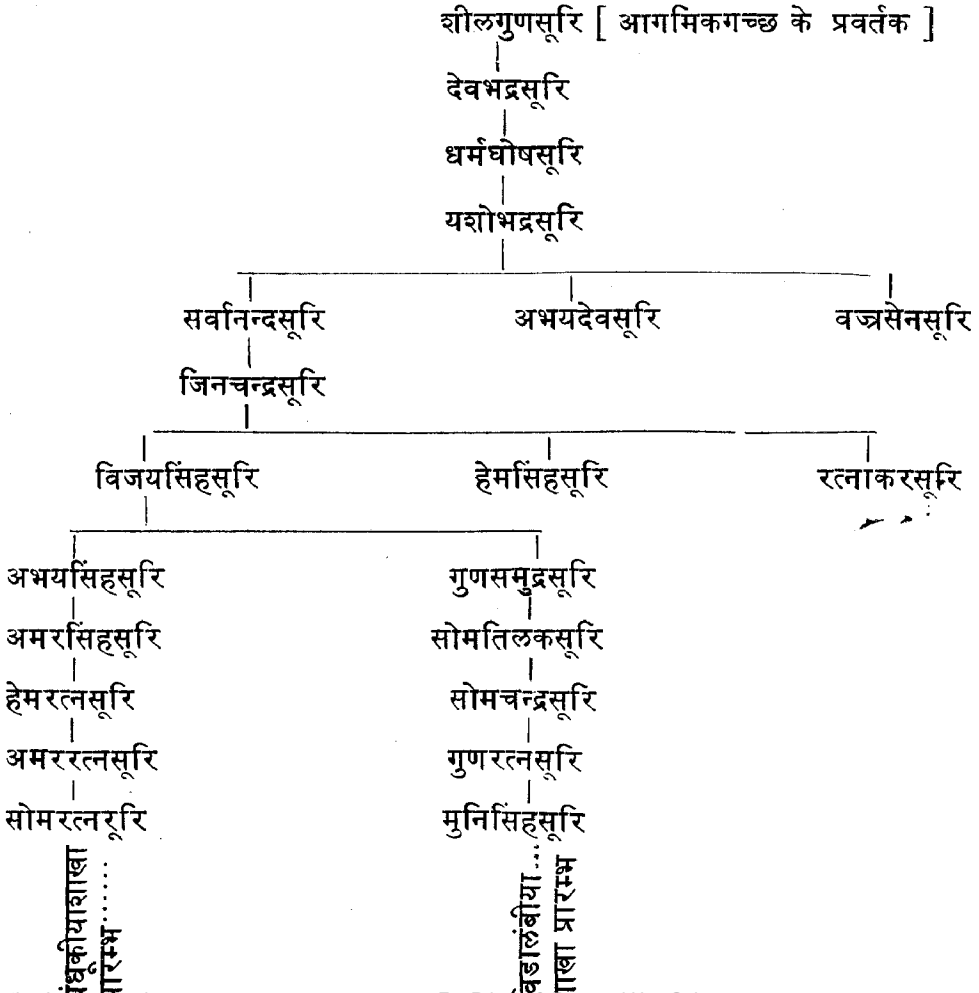

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अध्ययन की सुविधा के लिये दोनों शाखाओं का अलग-अलग विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। इनमें सर्वप्रथम साहित्यिक साक्ष्यों और तत्पश्चात् अभिलेखीय साक्ष्यों के विवरणों की विवेचना की गयी है।

साहित्यिक साक्ष्य

१- **पुण्यसाररास**[1]—यह कृति आगमगच्छीय आचार्य हेमरत्नसूरि के शिष्य साधुमेरु द्वारा वि० सं० १५०१ पौषवदि ११ सोमवार को धंधूका नगरी में रची गयी। कृति के अन्त में रचनाकार ने अपनी गुरुपरम्परा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है—

अमरसिंहसूरि
|
हेमरत्नसूरि
|
साधुमेरु [रचनाकार]

२- **अमररत्नसूरिफागु**[2] मरु-गुर्जर भाषा में लिखित १८ गायाओं की इस कृति को श्री मोहनलाल दलीचन्द देसाई ने वि० सम्वत् की १६वीं शती की रचना मानी है। इस कृति में रचनाकार ने अपना परिचय केवल अमररत्नसूरिशिष्य इतना ही बतलाया है। यह रचना प्राचीनफागुसंग्रह में प्रकाशित है।

अमररत्नसूरि
|
अमररत्नसूरिशिष्य

३- **सुन्दरराजारास**[3]—आगमगच्छीय अमररत्नसूरि की परम्परा के कल्याणराजसूरि के शिष्य क्षमाकलश ने वि० सं० १५५१ में इस कृति की रचना की। क्षमाकलश की दूसरी कृति ललिताङ्गकुमाररास वि० सं० १५५३ में रची गयी है। दोनों ही कृतियाँ मरु-गूर्जर

---

१. आषाढ़ादि पनर अेकोतरइ, पोस वदि इग्यारिसि अंतरइ।
धंधूकपुरि कृपारस सत्र, सोमवारि समर्थिउ अे चरित्र॥
कुमतरुख वणभंग गइंद, जिनशासन रयणायर इंदु।
सद्गुरुश्रीअमरसिंहसूरिंद, सेवइं भविय जसुय अरविंद॥
तसु पाटि नयनानंद अमीबिंदु गुरु, श्रीहेमरत्नसूरिमुणिंद।
आगमगच्छ प्रकाश दिणिंद, जसु दीसइ वर परि यरविंद॥
सुगुरु पसाइं नयर गोआलेर, धणी पुण्यसार रिद्धिउ कुबेर।
तासु गुण इम वर्णवइ अजस्त्र, साधुमेरुगणि पंडित मिश्र॥
देसाई, मोहनलाल दलीचन्द—जैनगूर्जरकविओ (नवीन संस्करण, अहमदाबाद, १९८६ ई०) भाग १, पृ० ८५ और आगे।

२. देसाई, पूर्वोक्त, पृ० ४७८ और आगे

३. वही, पृ० २०१-२०२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाषा में हैं। इसकी प्रशस्ति में रचनाकार ने अपनी गुरु-परम्परा का सुन्दर परिचय दिया है, जो इस प्रकार है—

अमररत्नसूरि
|
सोमरत्नसूरि
|
कल्याणराजसूरि
|
क्षमाकलश [सुन्दरराजारास एवं ललिताङ्गकुमाररास के कर्ता]

४-**लघुक्षेत्रसमासचौपाई**[1]—यह कृति आगमगच्छीय मतिसागरसूरि द्वारा वि०सं० १५९४ में पाटन नगरी में रची गयी है। इसकी भाषा मरु-गुर्जर है। रचना के प्रारम्भ और अन्त में रचनाकार ने अपनी गुरु-परम्परा की चर्चा की है, जो इस प्रकार है—

सोमरत्नसूरि
|
गुणनिधानसूरि
|
उदयरत्नसूरि
|
गुणमेरुसूरि
|
मतिसागरसूरि [रचनाकार]

अभिलेखीय साक्ष्य

आगमिक गच्छ के मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित तीर्थङ्कर प्रतिमाओं पर वि०सं० १४२१ से वि०सं० १६८३ तक के लेख उत्कीर्ण हैं। इन प्रतिमालेखों के आधार पर इस गच्छ के कुछ मुनिजनों के पूर्वापर सम्बन्ध स्थापित होते हैं, जो इस प्रकार हैं—

१- **अमरसिंहसूरि**—इनके द्वारा वि०सं० १४५१ से वि० सं० १४७८ के मध्य प्रतिष्ठापित ७ प्रतिमा लेख उपलब्ध हैं, इनका विवरण इस प्रकार है—

वि०सं० १४५१	ज्येष्ठ सुदि ४ रविवार	१ प्रतिमा
वि०सं० १४६२	वैशाख सुदि ३	,,
वि०सं० १४६५	माघ सुदि ३ रविवार	,,
वि०सं० १४७०	तिथि विहीन	,,
वि०सं० १४७५	,,	,,
वि०सं० १४७६	चैत्र वदि १ शनिवार	,,
वि०सं० १४७८	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	,,

१. देसाई, पूर्वोक्त पृ० ३३७ और आगे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२–अमरसिंहसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि—हेमरत्नसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित ४० प्रतिमायें अद्यावधि उपलब्ध हुई हैं। ये सभी प्रतिमायें लेख युक्त हैं। इन पर वि०सं० १४८४ से वि० सं० १५२१ तक के लेख उत्कीर्ण हैं। इनका विवरण इस प्रकार है—

वि०सं०	१४८४	वैशाख सुदि ३ शुक्रवार	१ प्रतिमा
”	१४८४	मार्ग शीर्ष सुदि ५ रविवार	”
”	१४८५	ज्येष्ठ वदि·····	२ प्रतिमा
”	१४८७	माघ सुदि ५ गुरुवार	१ प्रतिमा
”	१४८८	ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रवार	”
”	१४८९	माघ वदि २ शुक्रवार	”
”	१४८९	तिथि विहीन	”
”	१४९०	फाल्गुन-सोमवार	”
”	१४९१	द्वितीय ज्येष्ठ वदि ७ शनिवार	”
”	१४९२	ज्येष्ठ वदि·····	”
”	१५०३	माघ वदि ८ बुद्धवार	”
”	१५०४	फाल्गुन सुदि १२ गुरुवार	”
”	१५०५	माघ सुदि ९ शनिवार	२ प्रतिमा
”	१५०६	तिथि विहीन	”
”	१५०७	ज्येष्ठ सुदि ९	१ प्रतिमा
”	१५०७	माघ सुदि १३ शुक्रवार	”
”	१५१२	तिथि विहीन	२ प्रतिमा
”	१५१२	ज्येष्ठ वदि ५ सोमवार	१ प्रतिमा
”	१५१२	ज्येष्ठ सुदि १० रविवार	”
”	१५१२	वैशाख वदि १० शुक्रवार	२ प्रतिमा
”	१५१२	वैशाख सुदि ५ शुक्रवार	३ प्रतिमा
”	१५१२	फाल्गुन वदि ३ शुक्रवार	१ प्रतिमा
”	१५१५	वैशाख सुदि १० गुरुवार	”
”	१५१५	फाल्गुन सुदि ८ शनिवार	”
”	१५१६	वैशाख सुदि ३	”
”	१५१७	वैशाख सुदि ३ सोमवार	”
”	१५१८	माघ सुदि ५ गुरुवार	”
”	१५१९	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	”
”	१५१९	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	२ प्रतिमा
”	१५१९	माघ वदि ९ शनिवार	१ प्रतिमा
”	१५१९	माघ सुदि ३ सोमवार	”
”	१५२१	आषाढ़ सुदि १ गुरुवार	”

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. **हेमरत्नसूरि के पट्टधर अमररत्नसूरि**—इनके द्वारा वि०सं० १५२४ से वि० सं० १५४७ के मध्य प्रतिष्ठापित १८ प्रतिमायें उपलब्ध हुई हैं। इनका विवरण इस प्रकार है—

वि० सं० १५२४	वैशाख सुदि २ गुरुवार	१ प्रतिमा
" " १५२४	कार्तिक वदि १३ शनिवार	"
" " १५२५	तिथि विहीन	"
" " १५२७	" "	"
" " १५२८	वैशाख सुदि ५ शुक्रवार	"
" " १५२९	ज्येष्ठ वदि १ शुक्रवार	२ प्रतिमा
" " १५३०	माघ वदि २ शुक्रवार	१ प्रतिमा
" " १५३१	माघ सुदि ५	"
" " १५३२	वैशाख सुदि ३	४ प्रतिमा
" " १५३२	ज्येष्ठ वदि १३ बुद्धवार	१ प्रतिमा
" " १५३५	वैशाख सुदि ६ सोमवार	"
" " १५३५	आषाढ़ सुदि २ मंगलवार	"
" " १५३६	वैशाख सुदि ३ शुक्रवार	"
" " १५४७	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	"

४. **अमररत्नसूरि के पट्टधर सोमरत्नसूरि**—इनके द्वारा प्रतिष्ठापित १२ प्रतिमायें मिलती हैं, जो वि० सं० १५४८ से वि० सं० १५८१ तक की हैं। इसका विवरण इस प्रकार है—

वि०सं० १५४८	वैशाखसुदि ३	१ प्रतिमा
" " १५५२	वैशाख सुदी ३	"
" " १५५२	माघ वदि ८ शनिवार	"
" " १५५५	ज्येष्ठ सुदि ९ रविवार	"
" " १५५६	वैशाख सुदि १३ रविवार	"
" " १५६७	वैशाख सुदि ३ बुद्धवार	"
" " १५६९	वैशाख सुदि ९ शुक्रवार	"
" " १५७१	चैत्र वदि २ गुरुवार	"
" " १५७१	चैत्र वदि ७ गुरुवार ··· ?	"
" " १५७३	वैशाख सुदि ६ गुरुबार	"
" " १५७३	फाल्गुन सुदि २ रविवार	"
" " १५८१	माघ सुदि ५ गुरुवार	"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इस प्रकार अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर आगमगच्छ के उक्त मुनिजनों का जो पूर्वापर सम्बन्ध स्थापित होता है, वह इस प्रकार है—

अमरसिंहसूरि [वि० सं० १४५१–१४८३]
|
हेमरत्नसूरि [वि० सं० १४८४–१५२१]
|
अमररत्नसूरि [वि० सं० १५२४–१५४७]
|
सोमरत्नसूरि [वि० सं० १५४८–१५८१]

पूर्व प्रदर्शित पट्टावलियों की तालिका में श्री मोहनलाल दलीचन्द देसाई द्वारा आगमिकगच्छ और उसकी दोनों शाखाओं की अलग-अलग प्रस्तुत की गई पट्टावलियों को रखा गया है। देसाई द्वारा दी गयी आगमिकगच्छ की गुर्वावली शीलगुणसूरि से प्रारम्भ होकर हेमरत्नसूरि तक एवं धंधूकीया शाखा की गुर्वावली अमररत्नसूरि से प्रारम्भ होकर मेघरत्नसूरि तक के विवरण के पश्चात् समाप्त होती है। ये दोनों गुर्वावलियां मुनि जिनविजय जी द्वारा दी गई धंधूकीयाशाखा की गुर्वावली [जो शीलगुणसूरि से प्रारम्भ होकर मेघरत्नसूरि तक के विवरण के पश्चात् समाप्त होती है] से अभिन्न हैं अतः इन्हें अलग-अलग मानने और इनकी अप्रामाणिकता का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है।

अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा ज्ञात पूर्वोक्त चार आचार्यों [अमरसिंहसूरि–हेमरत्नसूरि–अमररत्नसूरि–सोमरत्नसूरि] के नाम इसी क्रम में धंधूकीया शाखा की पट्टावली में मिल जाते हैं। इसके अतिरिक्त ग्रंथप्रशस्तियों द्वारा आगमिक गच्छ के मुनिजनों के जो नाम ज्ञात होते हैं, उनमें से न केवल कुछ नाम धंधूकीयाशाखा की पट्टावली में मिलते हैं, बल्कि इस शाखा के साधुमेरुसूरि, कल्याणराजसूरि, क्षमाकलशसूरि, गुणमेरुसूरि, मतिसागरसूरि आदि ग्रन्थकारों के बारे में केवल उक्त ग्रंथप्रशस्तियों से ही ज्ञात होते हैं।

इस प्रकार धंधूकीया शाखा की परम्परागत पट्टावली में उल्लिखित अभयसिंहसूरि, अमरसिंहसूरि, हेमरत्नसूरि, अमररत्नसूरि, सोमरत्नसूरि आदि आचार्यों के बारे में जहाँ अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा कालनिर्देश की जानकारी होती है, वहीं ग्रन्थप्रशस्तियों के आधार पर इस शाखा के अन्य मुनिजनों के बारे में भी जानकारी प्राप्त होती है।

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के संयोग से आगमिकगच्छ की धंधूकीया शाखा की परम्परागत पट्टावली को जो नवीन स्वरूप प्राप्त होता है, वह इस प्रकार है—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित आगमिकगच्छ [धंधूकीयाशाखा]
का वंशवृक्ष
[**तालिका-१**]

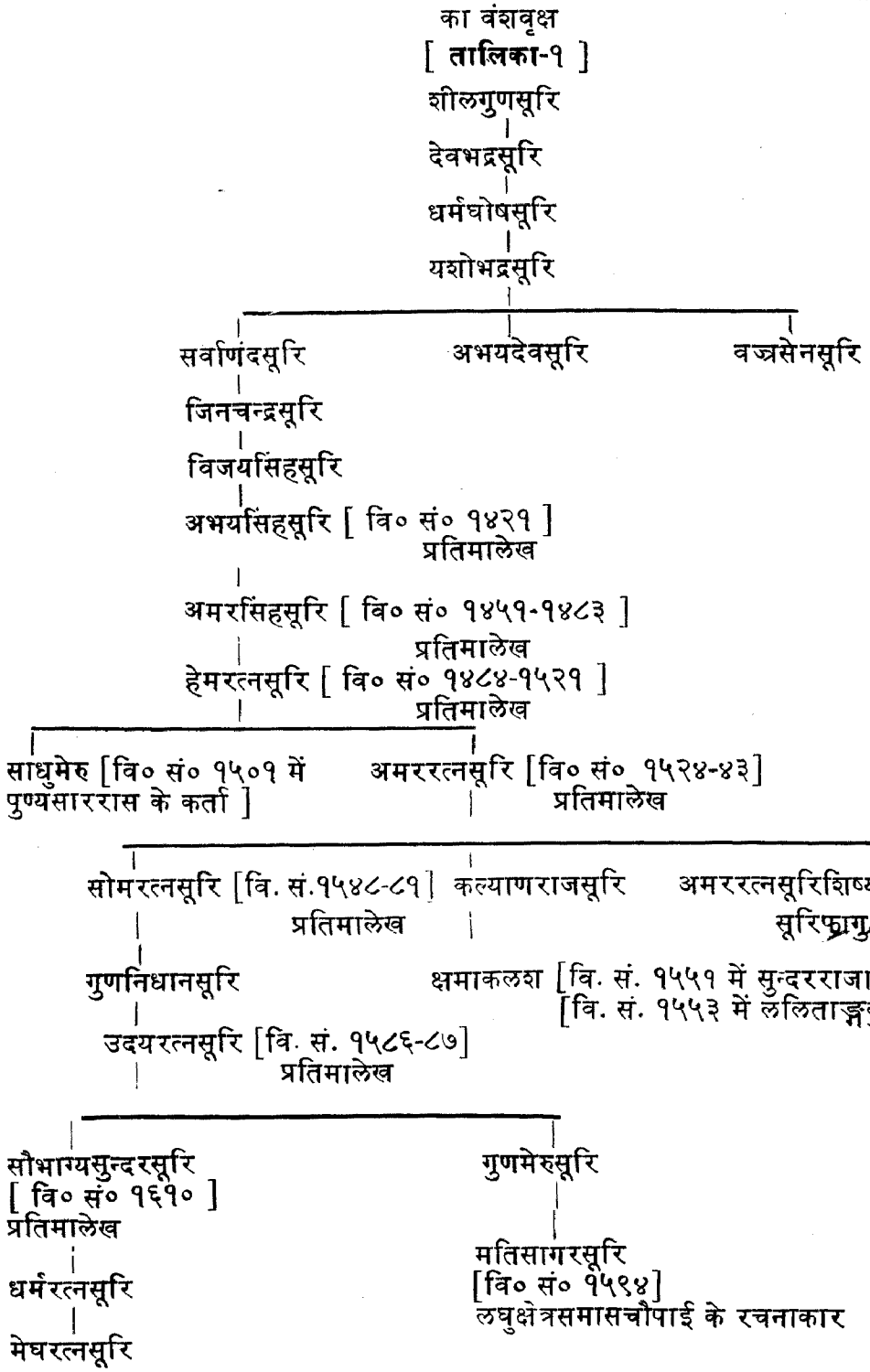

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैसा कि पूर्व में ही स्पष्ट किया जा चुका है, अभयसिंहसूरि के पश्चात् उनके शिष्यों अमरसिंहसूरि और सोमतिलकसूरि से आगमिकगच्छ की दो शाखायें अस्तित्व में आयीं। अमरसिंहसूरि की शिष्यसंतति आगे चलकर धंधूकीया शाखा के नाम से जानी गयी। उसी प्रकार सोमतिलकसूरि की शिष्य परम्परा विडालंबीयाशाखा के नाम से प्रसिद्ध हुई।

मुनिसागरसूरि द्वारा रचित आगमिकगच्छपट्टावली में अभयसिंहसूरि के पश्चात् सोमतिलकसूरि से मुनिरत्नसूरि तक ७ आचार्यों का क्रम इस प्रकार मिलता है—

सोमतिलकसूरि
|
सोमचंद्रसूरि
|
गुणरत्नसूरि
|
मुनिसिंहसूरि
|
शीलरत्नसूरि
|
आनन्दप्रभसूरि
|
मुनिरत्नसूरि

साहित्यिक साक्ष्यों के आधार पर इस पट्टावली के गुणरत्नसूरि और मुनिरत्नसूरि के अन्य शिष्यों के सम्बन्ध में भी जानकारी प्राप्त होती है।

गजसिंहकुमाररास[1] (रचनाकाल वि० सं० १५१३) की प्रशस्ति में रचनाकार देवरत्नसूरि ने अपने गुरु गुणरत्नसूरि का ससम्मान उल्लेख किया है।

इसी प्रकार मलयसुन्दरीरास[2] (रचनाकाल वि० सं० १५४३) और कथाबत्तीसी (रचनाकाल वि० सं० १५५७) की प्रशस्तियों में रचनाकार ने अपने गुरु परम्परा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है—

मुनिसिंहसूरि
|
मतिसागरसूरि
|
उदयधर्मसूरि [रचनाकार]

आगमिकगच्छीय उदयधर्मसूरि (द्वितीय) द्वारा रचित **धर्मकल्पद्रुम** की प्रशस्ति में रचनाकार ने अपने गुरु-परम्परा का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है—

१. मिश्र, शितिकंठ–हिन्दी जैन साहित्य का बृहद् इतिहास [भाग-१] मरु-गूर्जर (वाराणसी १९९० ई०) पृ० ४००

२. मिश्र, शितिकंठ, पूर्वोक्त, पृ० ३३४ और आगे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

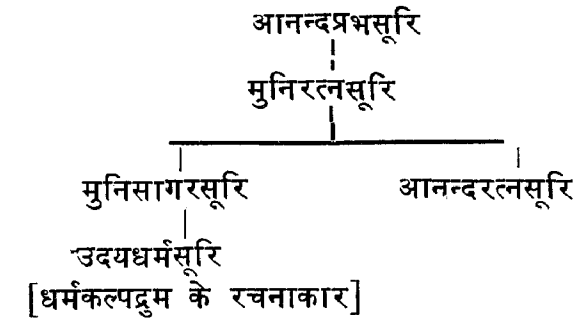

अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा इस पट्टावली के अंतिम चार आचार्यों का जो तिथिक्रम प्राप्त होता है, वह इस प्रकार है—

मुनिसिंहसूरि द्वारा वि० सं० १४९९ कार्तिक सुदी ५ सोमवार को प्रतिष्ठापित भगवान् शान्तिनाथ की एक प्रतिमा प्राप्त हुई है। इसी प्रकार मुनिसिंहसूरि के शिष्य शीलरत्नसूरि द्वारा वि० सं० १५०६ से वि० सं० १५१२ तक प्रतिष्ठापित ५ प्रतिमायें मिलती हैं। शीलरत्नसूरि के शिष्य आनन्दप्रभसूरि द्वारा वि० सं० १५१३ से वि० सं० १५२७ तक प्रतिष्ठापित ६ प्रतिमायें प्राप्त होती हैं। आनन्दप्रभसूरि के शिष्य मुनिरत्नसूरि द्वारा वि० सं० १५२३ और वि० सं० १५४२ में प्रतिष्ठापित २ जिन प्रतिमायें प्राप्त हुई हैं। अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा ही मुनिरत्नसूरि के शिष्य आनन्दरत्नसूरि का भी उल्लेख प्राप्त होता है। उनके द्वारा प्रतिष्ठापित ५ तीर्थङ्कर प्रतिमायें मिली हैं, जो वि० सं० १५७१ से वि० सं० १५८३ तक की हैं। उक्त बात को तालिका के रूप में निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है—

सोमतिलकसूरि		
सोमचन्द्रसूरि		
गुणरत्नसूरि		
मुनिसिंहसूरि	[वि० सं० १४९९]	१ प्रतिमा लेख
शीलरत्नसूरि	[वि० सं० १५०६-१५१२]	५ प्रतिमा लेख
आनन्दप्रभसूरि	[वि० सं० १५१३-१५२७]	६ प्रतिमा लेख
मुनिरत्नसूरि	[वि० सं० १५२३-१५४२]	२ प्रतिमा लेख
आनन्दरत्नसूरि	[वि० सं० १५७१-१५८३]	५ प्रतिमा लेख

श्री मोहनलाल दलीचन्द देसाई द्वारा प्रस्तुत आगमिकगच्छ की विडालंबीया शाखा की गुर्वावली इस प्रकार है—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनिरत्नसूरि
|
आनन्दरत्नसूरि
|
ज्ञानरत्नसूरि
|
हेमरत्नसूरि
|
उदयसागरसूरि — धर्महंससूरि [वि० सं० १६२० के लगभग नववाड ढालबंध के रचनाकार]
|
भानुभट्टसूरि
|
माणिक्यमंगलसूरि
[वि० सं० १६३९ में अंबडरास के रचनाकार [

उक्त पट्टावली के आधार पर मुनिसागरसूरि द्वारा रचित आगमिकगच्छपट्टावली में ६ अन्य नाम भी जुड़ जाते हैं। इस प्रकार ग्रन्थ प्रशस्ति, प्रतिमा लेख तया उपरोक्त पट्टावली के आधार पर मुनिसागरसूरि द्वारा रचित पट्टावली अर्थात् आगमिकगच्छ की विडालंबीया शाखा की पट्टावली को जो नवीन स्परूप प्राप्त होता है, वह इस प्रकार है—

[तालिका-२]

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित आगमिकगच्छ [विडालंबीयाशाखा] का **वंश वृक्ष**

शीलगुणसूरि
|
देवभद्रसूरि
|
धर्मघोषसूरि
|
यशोभद्रसूरि
|
सर्वाणंदसूरि — अभयदेवसूरि — वज्रसेनसूरि
|
जिनचन्द्रसूरि (सर्वाणंदसूरि के शिष्य)
|
विजयसिंहसूरि — हेमसिंहसूरि — रत्नाकरसूरि
|
अभयसिंहसूरि (विजयसिंहसूरि के शिष्य)
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

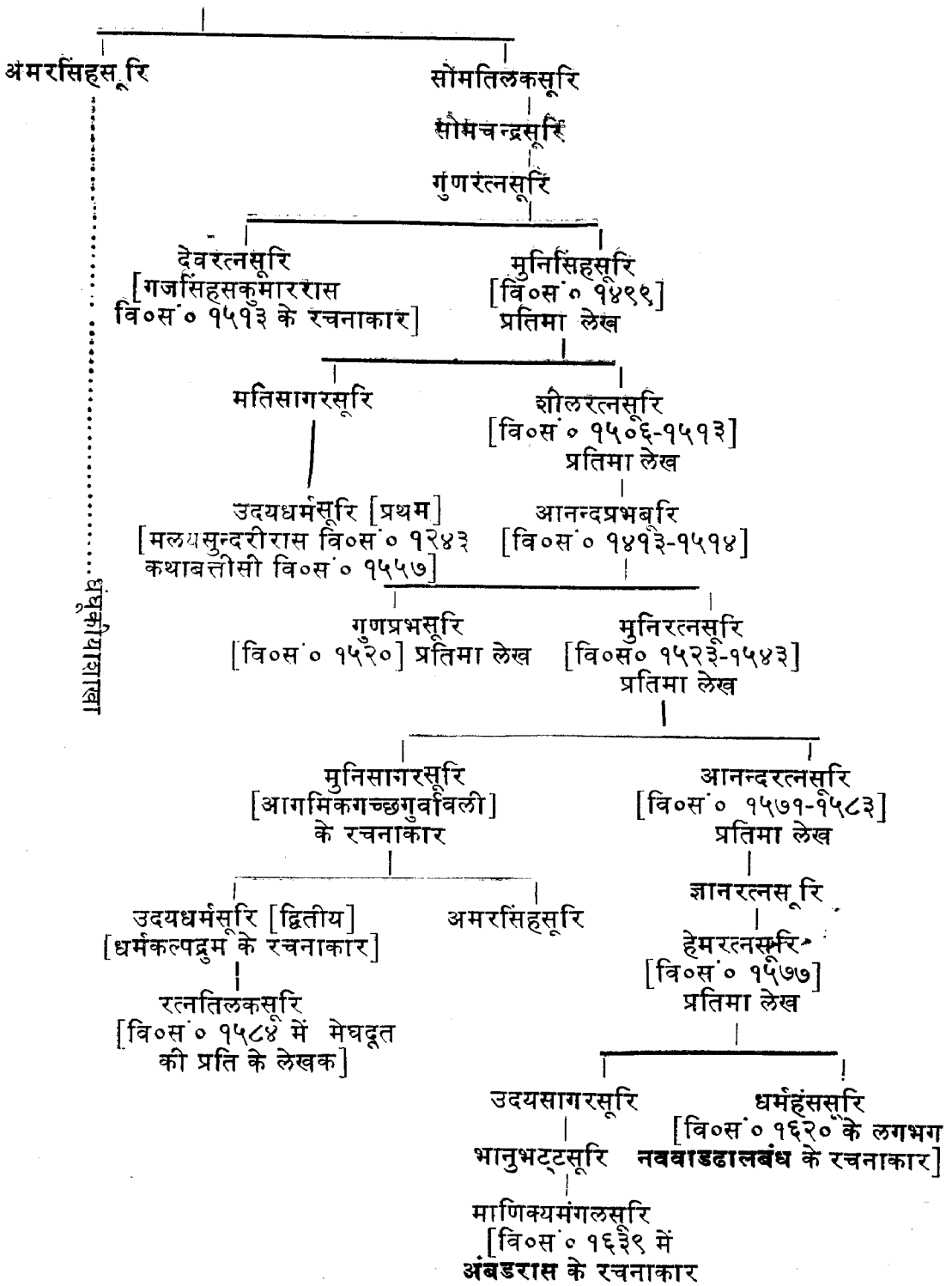

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर आगमिक गच्छ के जयानन्दसूरि, देवरत्नसूरि, शीलरत्नसूरि, विवेकरत्नसूरि, संयमरत्नसूरि, कुलवर्धनसूरि, विनयमेरुसूरि, जयरत्नगणि, देवरत्नगणि, वरसिंहसूरि, विनयरत्नसूरि आदि कई मुनिजनों के नाम ज्ञात होते हैं। इन मुनिजनों के परस्पर सम्बन्ध भी उक्त साक्ष्यों के आधार पर निश्चित हो जाते हैं और इनकी जो गुर्वावली बनती है, वह इस प्रकार है—

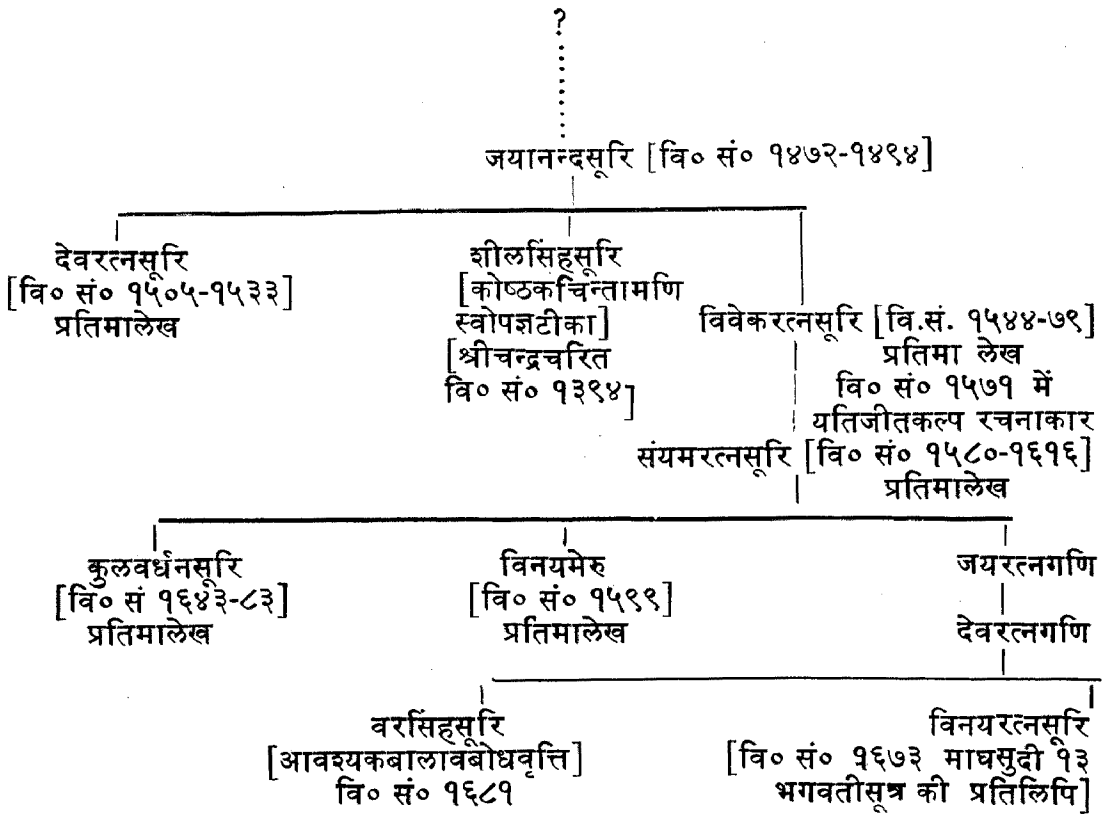

आगमिकगच्छ के मुनिजनों की उक्त तालिका का आगमिकगच्छ की पूर्वोक्त दोनों शाखाओं (धंधूकीया शाखा और विडालंबीया शाखा) में से किसी के साथ भी समन्वय स्थापित नहीं हो पाता, ऐसी स्थिति में यह माना जा सकता है कि आगमिकगच्छ में उक्त शाखाओं के अतिरिक्त भी कुछ मुनिजनों की स्वतंत्र परम्परा विद्यमान थी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसी प्रकार आगमिकगच्छीय जयतिलकसूरि,[1] मलयचन्द्रसूरि,[2] जिनप्रभसूरि,[3] सिंहदत्तसूरि[4] आदि की कृतियाँ तो उपलब्ध होती हैं, परन्तु उनके गुरु-परम्परा के बारे में हमें कोई जानकारी नहीं मिलती है।

अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा भी इस गच्छ के अनेक मुनिजनों के नाम तो ज्ञात होते हैं, परन्तु उनकी गुरु-परम्परा के बारे में हमें कोई जानकारी नहीं मिलती। यह बात प्रतिमालेखों की प्रस्तुत तालिका से भी स्पष्ट होती है—

१. **कर्मग्रन्थ**–रचनाकाल वि० सं० १४५०
मलयसुन्दरीकथा–रचनाकाल अज्ञात [यह कृति प्रकाशित हो चुकी है]
सुलसाचरित–[प्राचीनतम प्रति वि० सं० १४५३]
कथाकोश [वि० सं० १५वीं शती का मध्य]

२. **स्थूलभद्रकथानक**–यह कृति प्रकाशित हो चुकी है

३. **मल्लिनाथचरित**–रचनाकाल १३वीं शती के आसपास

४. **स्थूलभद्ररास**–रचनाकाल १६वीं शती के प्रथम चरण के आसपास

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क	संवत्	तिथि	आचार्य का नाम	प्रतिमालेख/ स्तम्भलेख	प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१४२०	कार्तिक सुदि ५ रविवार	—	देवकुलिका का लेख	वीर जिनालय, जीरावला	मुनि जयन्तविजय संपा० आबू, भाग–५, लेखाङ्क १२२
२.	१४२१	कार्तिक सुदि ५ रविवार	—	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	जीरावलीतीर्थ चैत्यदेवकुलिका, जैन मन्दिर, थराद	लोढ़ा, दौलत सिंह संपा० श्री प्रतिमालेख संग्रह, लेखाङ्क ३०४(अ)
३.	१४२१	माघ वदि ११ [सोमवार	अभयसिंहसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, गोगा दरवाजा, बीकानेर	नाहटा, अगरचन्द संपा०—बीकानेर जैनलेखसंग्रह — लेखाङ्क—१९३६
४.	१४३८	आषाढ़ सुदि ९ शुक्रवार	जयतिलकसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर स्वामी का मन्दिर, ओसिया	नाहर, पूरनचंद संपा० जैनलेखसंग्रह भाग १, लेखाङ्क ७९५
५.	१४३९	पौष वदि ८ रविवार	जयाणंदसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय, मांडवीपोल, खंभात	मुनि बुद्धिसागर संपा—जैनधातुप्रतिमा लेखसंग्रह, भाग २ लेखांक ६३१
५ अ.	१४४०	पौष वदि ··।	श्रीतिलकसूरि	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	कोठार पंचतीर्थी, शत्रुञ्जय	मुनि कंचनसागर संपा०— शत्रुञ्जयगिरिराज-दर्शन, लेखाङ्क २६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६.	१४५१	ज्येष्ठ सुदि ४ रविवार	अमरसिंहसूरि	शांतिनाथ की धातु पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, वणा	मुनि विजयधर्मसूरि संपा०—प्राचीनलेखसंग्रह लेखाङ्क ९४
७.	१४६२	वैशाख सुदि ३	अमरसिंहसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, मीयागाम	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २ लेखाङ्क २७७
८.	१४६४	माघ सुदि ३ शनिवार	अमरसिंहसूरि	शांतिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीजापुर	वही, भाग १ लेखाङ्क ४२२
९.	१४७०	—	अमरसिंहसूरि	शांतिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	जैन देरासर, सौदागर पोल, अहमदाबाद	वही, भाग १ लेखाङ्क ८२६
१०.	१४७१	—	अमरसिंहसूरि	चौबीसी जिन प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, थराद	लोढ़ा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ७५
११.	१४७२	ज्येष्ठ सुदि ११	जयाणंदसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, अहमदाबाद	मुनिबुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क ९०१
१२.	१४७५	—	अमरसिंहसूरि	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	अजितनाथ जिनालय, नदियाड	वही, भाग २ लेखाङ्क ३९८
१३.	१४७६	चैत्र वदि १ शनिवार	अमरसिंहसूरि	महावीर स्वामी की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चोसठिया जी का मन्दिर, नागौर	विनयसागर, संपा०–प्रतिष्ठालेखसंग्रह लेखाङ्क २१५

१४.	१४७६	चैत्र वदि ९ रविवार	जयाणंदसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य-बावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखाङ्क ४७०
१५.	१४७८	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	अमरसिंहसूरि	शांतिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	जैन देरासर, पाटडी	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १२०
१६.	१४८२	फाल्गुन सुदि ३ रविवार	जयाणंदसूरि	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, कडाकोटडी	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग २, लेखाङ्क ६१३
१७.	१४८३	माघ वदि ११ गुरुवार	जयाणंदसूरि	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, पाटण	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग १, लेखाङ्क २१७
१८.	१४८४	वैशाख सुदि ३ शुक्रवार	हेमराजसूरि	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	सीमंधरस्वामी का जिनालय, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखाङ्क १२३१
१९.	१४८४	मार्गशीर्ष सुदि ५ रविवार	अमरसिंहसूरि के पट्टधर श्री···रत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखाङ्क ९००
२०.	१४८५	ज्येष्ठ वदि···	अमरसिंहसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	चन्द्रप्रभ स्वामी की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, वणा	विजयधर्मसूरि पूर्वोक्त, लेखाङ्क १३५

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

२१.	१४८५	ज्येष्ठमास···१	अमरसिंहसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	सुविधिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ देरासर, बीजापुर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १ लेखाङ्क ४२३
२२.	१४८७	माघ सुदि ५ गुरुवार	अमरसिंहसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	पार्श्वनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	सीमंधर स्वामी का मंदिर, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखाङ्क १२२६
२३.	१४८८	ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रवार	हेमरत्नसूरि	शीतलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, अगरचन्द, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ७
२४.	१४८८	—	जयानंदसूरि	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, बालकेश्वर, मुम्बई	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखाङ्क १७९८
२५.	१४८९	माघ वदि २ शुक्रवार	अमरसिंहसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	पार्श्वनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	कुंथुनाथ देरासर, बीजापुर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क ४४०
२६.	१४८९	तिथिविहीन	अमरसिंहसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क १३४६
२७.	१४९०	फाल्गुन··· सोमवार	अमरसिंहसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	पार्श्वनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, संपा०—**राधनपुर**-प्रतिमालेखसंग्रह, लेखाङ्क ११८

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

२८.	१४९१	द्वितीय ज्येष्ठ वदि ७ शनिवार	हेमरत्नसूरि	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क १२६९
२९.	१४९२	ज्येष्ठ वदि···	हेमरत्नसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, अगरचन्द पूर्वोक्त, लेखाङ्क ७६३
३०.	१४९३	चैत्रवदि ८ गुरुवार	जयाणंदसूरि	धर्मनाथ की धातु पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १२२
३१.	१४९४	माघ सुदि ५ गुरुवार	जयानन्दसूरि के शिष्य श्रीसूरि	संभवनाथ की धातु पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, राधनपुर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १६२ एवं मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १२३
३२.	१३९६	फाल्गुन वदि २ शुक्रवार	जयानन्दसूरि के शिष्य श्रीसूरि	विमलनाथ की चौबीसी का प्रतिमा लेख	नवपल्लव पार्श्वनाथ जिनालय, बोलपीपलो, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखाङ्क १०८६
३३.	१४९९	कार्तिकसुदि ५ सोमवार	मुनिसिंहसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, खेरालु	वही, भाग १, लेखाङ्क ७५५
३४.	१५००	चैत्रसुदि १३ रविवार	सिंहदत्तसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय पूर्वोक्त, लेखाङ्क १३१
३५.	१५०३	माघ वदि ३ शुक्रवार	सिंहदत्तसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	गोड़ी पार्श्वनाथ देरासर, बीजापुर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १ लेखाङ्क ४४८

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

३६.	१५०३	माघ वदि ८ बुधवार	हेमरत्नसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ३३८
३७	१५०३	माघ सुदि ४ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक ८७८
३८.	१५०३	माघ सुदि ५ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	शीतलनाथ की धातु पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, मडार	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ७८
३९.	१५०४	फाल्गुन सुदि १२ गुरुवार	अमरसिंहसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथ पोल अहमदाबाद	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १३१२
४०.	१५०४	—	जिनचन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १३०९
४१.	१५०५	माघ सुदि ९ शनिवार	हेमरत्नसूरि	शांतिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	ओसवालों का मंदिर, पूना	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २०८
४२.	१५०५	माघ सुदि ९ शनिवार	हेमरत्नसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर स्वामी का मन्दिर, थराद	लोढ़ा, दौलत सिंह पूर्वोक्त, लेखांक १
४३.	१५०६	चैत्र वदि ४ बुधवार	शीलरत्नसूरि	वासुपूज्य स्वामी की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	देहरी न० ९७, शत्रुञ्जय	मुनि कंचनसागर, पूर्वोक्त, लेखांक १७९

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

४४.	१५०६	चैत्र वदि ५ गुरुवार	हर्षतिलकसूरि सिंहदत्तसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, मीयागाम	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २८२
४५.	१५०६	पौष वदि २ बुधवार	हेमरत्नसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	वासुपूज्यस्वामी का जिनालय, बीकानेर	नाहटा, अगरचन्द, पूर्वोक्त, लेखांक १३२६
४६.	१५०६	तिथिविहीन	अमररत्नसूरि के पट्टधर हेमरत्नसूरि	सुविधिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	हीरालाल गुलाब सिंह का घरदेरासर, चितपुर रोड, कलकत्ता	नाहर, पूरनचन्द, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १००४
४७.	१५०६	तिथि विहीन	अमररत्नसूरि हेमरत्नसूरि	सुविधिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	यति पन्नालाल का घर देरासर, कलकत्ता	वही, भाग १ लेखांक ३९१
४८.	१५०७	वैशाख वदि ६ गुरुवार	शीलरत्नसूरि	मुनि सुव्रतस्वामी की प्रतिमा का लेख	नवघरे का मन्दिर, चेलपुरी, दिल्ली	वही, भाग १, लेखांक ४७६
४९.	१५०७	वैशाख वदि ६ गुरुवार	शीलरत्नसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, वडावली	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग १, लेखांक ९७
५०.	१५०७	माघ सुदि ५ शुक्रवार	सिंहदत्तसूरि	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पद्मप्रभ जिनालय, घाट, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ४२०
५१.	१५०७	माघ सुदि १३ शुक्रवार	हेमरत्नसूरि	अभिनन्दन स्वामी की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ, जिनालय; दंतालवाडो, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ६८२

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

५२.	१५०७	वैशाख सुदि ६ गुरुवार	शीलरत्नसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर वडावली	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९७
५३.	१५०८	चैत्र सुदि १३ रविवार	सिंहदत्तसूरि	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, भरुच	वही, भाग २, लेखांक ३१५
५४.	१५०८	चैत्र सुदि १३ रविवार	सिंहदत्तसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, चौकसी पोल, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ८४२
५५.	१५०८	चैत्र सुदि १३ रविवार	सिंहदत्तसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, शकोपुर, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ९०९
५६.	१५०८	वैशाख वदि ११ रविवार	हर्षतिलकसूरि	श्रेयांसनाथकी प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, भरुच	वही, भाग २, लेखांक ३४२
५७	१५०८	वैशाख वदि १२ रविवार	जिनरत्नसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १३४९
५८.	१५०८	आषाढ सुदि २ रविवार	देवरत्नसूरि	शांतिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	घर देरासर, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक २२०
५९.	१५०९	वैशाख वदि ५१ शनिवार	देवरत्नसूरि	कुंथुनाथ की चौबीसी का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	वही, भाग २, लेखांक ३३१
५९. [अ]	१५(०?)९	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	दे…भिः	आदिनाथ की चौबीसी का लेख	संग्रामसोनी के मन्दिर की देवकुलिका, उज्जयन्त	ढाकी, एम० ए०-पं० बेचरदासदोशी स्मृतिग्रन्थ, पृ० १८८

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

६०.	१५१०	फाल्गुन वदि ३ शुक्रवार	हर्षतिलकसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ९८८
६१.	१५१०	फाल्गुन वदि ३ शुक्रवार	जिनरत्नसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, बड़ा बाजार, कलकत्ता	नाहर, पूरनचन्द, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १००
६२.	१५१०	फाल्गुन वदि ३ शुक्रवार	सिंहदत्तसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, मांडवीपोल, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ६१९
६३.	१५१०	फाल्गुन वदि ३ शुक्रवार	सिंहदत्तसूरि	विमलनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	गौड़ीजी भंडार, उदयपुर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक २६०
६४.	१५११	आषाढ़ सुदि ६ शुक्रवार	देवरत्नसूरि	वासूपूज्य की प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, कालोल	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७१८
६५.	१५११	आषाढ़ सुदि ६ शुक्रवार	देवरत्नसूरि	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १२५०
६६.	१५११	आषाढ़ सुदि ६ शुक्रवार	देवगुप्तसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	सीमंधर स्वामी का जिनालय, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ११६०
६७.	१५११	माघ सुदि १ शुक्रवार	सिंहदत्तसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय पूर्वोक्त, लेखांक १७०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६८.	१५१२	माघ सुदि १० बुधवार	सिंहदत्तसूरि	शांतिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	संभवनाथ देरासर, कड़ी	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७२३
६९.	१५१२	ज्येष्ठ वदि ५ सोमवार	हेमरत्नसूरि	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	पंचतीर्थी, शत्रुञ्जय	मुनि कंचनसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ४३९
७०.	१५१२	ज्येष्ठ सुदि १० रविवार	हेमरत्नसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, बडावली	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९५
७१.	१५१२	वैशाख वदि १० गुरुवार	हेमरत्नसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९५९
७२.	१५१२	वैशाख वदि १० गुरुवार	हेमरत्नसूरि	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मन्दिर, बडावली	वही, भाग १, लेखांक ९४
७३.	१५१२	वैशाख सुदि ५	हेमरत्नसूरि	कुन्थुनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	गोपों का उपाश्रय, बाड़मेर	नाहर, पूरनचन्द, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७४१
७४.	१५१२	वैशाख सुदि ५ शुक्रवार	हेमरत्नसूरि	कुन्थुनाथ की चौबीसी का लेख	चन्द्रप्रभ स्वामी का जिनालय, जैसलमेर	वही, भाग ३, लेखांक २१६५ एवं नाहटा, अगरचन्द पूर्वोक्त, लेखांक २७७५

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

७५.	१५१२	—	हेमरत्नसूरि	नमिनाथ की चौबीसी का लेख	शांतिनाथ देरासर, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १३२१
७६.	१५१२		शीलरत्नसूरि आदिरत्नसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, वादनवाड़ा	जैनसत्यप्रकाश, वर्ष ६, अंक १०, पृष्ठ ३७२-३७४, लेखाङ्क ८
७७.	१५१२	ज्येष्ठ सुदि १० रविवार	हेमरत्नसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, बडावली	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क ९५
७८.	१५१२	फाल्गुन वदि ३ शुक्रवार	हेमरत्नसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, चोलापोल, खंभात	वही, भाग-२, लेखाङ्क ६९५
७९.	१५१३	चैत्र सुदि ५ बुधवार	आणंदप्रभसूरि	कुंथुनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जीरावलापार्श्वनाथ देरासर, घोघा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २८७
८०.	१५१३	ज्येष्ठ सुदि ३ गुरुवार	देवरत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, वीरामगाम	वही, लेखाङ्क २९२
८१.	१५१३	आषाढ़ सुदि १० गुरुवार	देवरत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	नवपल्लव पार्श्वनाथ जिनालय, बोलपीपलो, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग २, लेखाङ्क १०९८
८२.	१५१३	माघ वदि २ शुक्रवार	साधुरत्नसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, चौकसी-पोल, खंभात	वही, भाग-२, लेखाङ्क ८००
८३.	१५१५	वैशाख सुदि १ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	सीमंधरस्वामी का देरासर, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखाङ्क ११६३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८४.	१५१५	वैशाख सुदि १० गुरुवार	हेमरत्नसूरि	संभवनाथ की पंच-तीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, करमदी	बिनयसागर, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ५३१
८५.	१५१५	कार्त्तिक वदि १ रविवार	देवरत्नसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	पद्मप्रभजिनालय, कडाकोटडी, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क ५९३
८६.	१५१५	कार्त्तिक वदि १ रविवार	देवरत्नसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	सीमंधरस्वामी का जिनालय, अहमदाबाद	वही, लेखाङ्क १२१२
८७.	१५१५	माघ सुदि ५ शनिवार	पादप्रभसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय, पालिताना	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ६६०
८८.	१५१५	फाल्गुन सुदि ८ शनिवार	हेमरत्नसूरि	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, खाडीवाडो, खेड़ा, गुजरात	बुद्धिसागर. पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क ४०७
८९.	१५१६	चैत्र वदि ४ गुरुवार	आणंदप्रभसूरि	चन्द्रप्रभस्वामी की प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय, भोंयरापाडो, खंभात	वही, भाग-२, लेखाङ्क ८८९
९०.	१५१६	वैशाख सुदि ३	हेमरत्नसूरि	विमलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, बड़ोदरा	वही, भाग-२, लेखाङ्क १२५
९१.	१५१६	ज्येष्ठ सुदि ३ गुरुवार	देवरत्नसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथमुख्यबावन जिनालय, मातर	वही, भाग-२, लेखाङ्क ४९९
९२.	१५१६	आषाढ़ सुदि ३ रविवार	देवरत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, नाहटों की गवाड़, बीकानेर	नाहटा, अगरचन्द, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १५१३

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

९३.	१५१६	आषाढ़ सुदि ९ शुक्रवार	देवरत्नसूरि	नमिनाथ की चांदी की सपरिकर प्रतिमा का लेख	सुपार्श्वनाथ जिनालय, नाहटों की गवाड़, बीकानेर	वही, लेखाङ्क १७६१	२७०
९४.	१५१६	कार्त्तिक सुदि १५ शनिवार	सिंहदत्तसूरि	वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा का लेख	सुव्रतनाथ जिनालय, खारवाडो, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग–२, लेखाङ्क–१०३२	
९५.	१५१७	वैशाख सुदि ३ सोमवार	हेमरत्नसूरि	शीतलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, लखनऊ	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क १५०५	
९६.	१५१७	वैशाख सुदि १२ सोमवार	आणंदप्रभसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १०८९	डा० शिव प्रसाद
९७.	१५१७	माघ सुदि ५ शुक्रवार	आणंदप्रभसूरि	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	सुविधिनाथ जिनालय, घोघा, काठियावाड़	नाहर, पूरनचंद, पूर्वोक्त, भाग–२, लेखांक १७६९	
९८.	१५१७	माघ सुदि ५ शुक्रवार	देवरत्नसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय, अजमेर	वही, भाग १, लेखांक ५५७ एवं विनयसागर, पूर्वोक्त लेखांक ५७२	
९९.	१५१७	माघ सुदि ५ शुक्रवार	देवरत्नसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, चुरु, राजस्थान	नाहटा, अगरचन्द, पूर्वोक्त, लेखांक २४०८	
१००.	१५१७	माघ सुदि ५ शुक्रवार	महेन्द्रसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १२८४	

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

१०१.	१५१७	माघ सुदि ५ शुक्रवार	पूर्णदेवसूरि	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथदेरासर, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ११३१
१०२.	१५१८	ज्येष्ठ सुदि २ शनिवार	देवरत्नसूरि	संभवनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, चौकसीपोल, खंभात	वही, भाग–२ लेखांक ८२७
१०३.	१५१८	माघ सुदि ५ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	पद्मप्रभ स्वामी की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनिविशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २१६
१०४.	१५१९	ज्येष्ठ वदि १ गुरुवार	देवरत्नसूरि	धर्मनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	मोतीसा की टूक, शत्रुञ्जय	मुनिकंचनसागर पूर्वोक्त, लेखांक ४६२
१०५.	१५१९	बैशाख वदि ११ शुक्रवार	हेमरत्नसूरि	धर्मनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	नवपल्लवपार्श्वनाथ देरासर, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग–२, लेखांक १०८९
१०६.	१५१९	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	पद्मप्रभस्वामी की पंचतीर्थी का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, अञ्जार	नाहर, पूरनचन्द, पूर्वोक्त, भाग–२ लेखांक १७२१
१०७.	१५१९	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	कुन्थुनाथ की पंच-तीर्थी प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	वही, भाग–३, लेखांक २३४४
१०८.	१५१९	माघ वदि ९ शनिवार	हेमरत्नसूरि	अजितनाथ की चौबीसी का लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, घड़ियाली पोल, बड़ोदरा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग–२, लेखांक १६०
१०९.	१५१९	माघ सुदि ३ सोमवार	हेमरत्नसूरि	वासुपूज्य की धातु प्रतिमा का लेख	शान्तिनाथ देरासर, जामनगर	विजयधर्मसूरि पूर्वोक्त, लेखांक ३३०

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

११०.	१५२०	चैत्र वदि ८ शुक्रवार	—	शीतलनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	शान्तिनाथ जिनालय, वीरमगाम	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त लेखांक ३४५
१११.	१५२०	वैशाख वदि ७ शनिवार	आणंदप्रभसूरि	मुनिसुव्रतस्वामी की धातु पंचतीर्थी का लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ देरासर, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २३१
११२.	१५२०	वैशाख वदि ७ शनिवार	आणंदप्रभसूरि के शिष्य गुणप्रभसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	मनमोहनपार्श्वनाथ जिनालय, चौकसीपोल, खंभात	बुद्धिसागर पूर्वोक्त भाग–२ लेखांक ८२४
११३.	१५२०	आषाढ़ सुदि ९ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	मुनिसुव्रत की चौबीसी का लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग–२ लेखांक ६६६
११४.	१५२१	आषाढ़ सुदि १ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	शीतलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि जिनालय, बीकानेर	नाहटा, अगरचंद-पूर्वोक्त, लेखांक १०२२
११५.	१५२३	कार्तिक वदि ५ सोमवार	मुनिरत्नसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, माणेकचौक, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग–२, लेखांक १००५
११६.	१५२३	वैशाख सुदि १३ गुरुवार	सिंहदत्तसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	बावन जिनालय, पेथापुर	वही, भाग–१, लेखांक ७१३
११७.	१५२३	फाल्गुन वदि ४ सोमवार	देवरत्नसूरि	कुन्थुनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	जील्लावाला देरासर, घोघा	विजयधर्मसूरि पूर्वोक्त, लेखांक ३७०
११८.	१५२४	वैशाख सुदि ३ सोमवार	देवरत्नसूरि	कुन्थुनाथ की धातु-पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ देरासर, लाजग्राम	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, भाग–५ लेखांक ४७७

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

११९.	१५२४	कार्त्तिक वदि १३ शनिवार	अमररत्नसूरि	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, गांभू	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग–१, लेखांक ७४
१२०.	१५२४	वैशाख सुदि २ गुरुवार	अमररत्नसूरि	संभवनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, किशनगढ़	विनयसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ६३९
१२१.	१५२५	पौष वदि ५ सोमवार	देवरत्नसूरि	पार्श्वनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	जैन देरासर, लींबडी	विजयधर्मसूरि पूर्वोक्त, लेखांक ३८८
१२२.	१५२५	माघ सुदि १३ बुधवार	देवरत्नसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेकचौक, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग–२, लेखांक ९३७
१२३.	१५२५	माघ सुदि १३ बुधवार	जयचन्द्रसूरि के पट्टधर देवरत्नसूरि	अभिनन्दनस्वामी की चौबीसी का लेख	घर देरासर, गामदेवी, वाचागांधी रोड, मुम्बई	नाहर, पूर्वोक्त, भाग–२, लेखांक १८००
१२४.	१५२५	—	अमररत्नसूरि	कुन्थुनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ४०३
१२५.	१५२७	वैशाख वदि ६ शुक्रवार	आनन्दप्रभसूरि	धर्मनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	नवखंडा पार्श्वनाथ देरासर, घोघा	वही, लेखांक ४०९
१२६.	१५२७	वैशाख वदि १०	देवरत्नसूरि	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्यबावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग–२ लेखांक ४६८
१२७.	१५२७	—	अमररत्नसूरि	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	सुविधिनाथ देरासर, घोघा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ४०५

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

१२८.	१५२८	आषाढ़ सुदि ५ रविवार	सिंहदत्तसूरि के पट्टधर सोमदेवसूरि	सुमतिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २६२ एवं मुनिजयन्तविजय, आबू, भाग ५, लेखांक ५१०
१२९.	१५२८	पौष सुदि ३ सोमवार	अमररत्नसूरि	धर्मनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक ४१३
१३०.	१५२९	वैशाख सुदि ५ शुक्रवार	देवरत्नसूरि	अभिनन्दनस्वामी की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ९४७
१३१.	१५२९	वैशाख सुदि ५ शुक्रवार	देवरत्नसूरि	पार्श्वनाथ की रत्नमय प्रतिमा के परिकर का लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, मांडवीपोल, खंभात	वही, भाग-२ लेखाङ्क ६४३
१३२.	१५२९	ज्येष्ठ वदि १ शुक्रवार	अमररत्नसूरि	संभवनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय, मांडवीपोल, खंभात	वही, भाग-२ लेखाङ्क ११४२
१३३.	१५२९	ज्येष्ठ वदि १ शुक्रवार	अमररत्नसूरि	पद्मप्रभ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, थराद	लोढ़ा, दौलतसिंह, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ८२
१३४.	१५३०	माघ वदि २ शुक्रवार	अमररत्नसूरि	मुनिसुव्रतस्वामी की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, (कोचरों में) बीकानेर	नाहटा, अगरचन्द, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १५८२
१३५.	१५३०	माघ सुदि १० गुरुवार	देवरत्नसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, माणेक चौक खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखाङ्क १०१०

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

Jain Education International

१३६.	१५३१	माघ सुदि ५	अमररत्नसूरि	चन्द्रप्रभस्वामी की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रतदेरासर, डभोई	वही, भाग १, लेखाङ्क ६५
१३७.	१५३१	माघ वदि ८ सोमवार	देवरत्नसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, ऊंझा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग–१, लेखाङ्क १८२
१३८.	१५३१	माघ वदि ८ सोमवार	देवरत्नसूरि	संभवनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग–२ लेखाङ्क १११९
१३९.	१५३१	माघ वदि ८ सोमवार	देवरत्नसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, पालिताना	नाहर, पूरनचन्द, पूर्वोक्त, भाग २,लेखाङ्क १७५९ एवं विजयधर्म-सूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ४३५
१४०.	१५३१	माघ वदि ८ सोमवार	देवरत्नसूरि	वासुपूज्यस्वामी की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ देरासर, कड़ी	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क ७२२
१४१.	१५३२	वैशाख ……।	अमररत्नसूरि	अभिनन्दनस्वामी की धातु-प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ४४६
१४२.	१५३२	वैशाख … …।	अमररत्नसूरि	शान्तिनाथ की प्रतिमा का लेख	बावनजिनालय, पेथापुर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग–१ लेखाङ्क ७१२
१४३.	१५३२	ज्येष्ठ वदि १३	अमररत्नसूरि	महावीर स्वामी की धातु-पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनिविशाल विजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २८१

For Private & Personal Use Only

www.jainelibrary.org

१४४.	१५३२	वैशाख सुदि ३	अमररत्नसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ७४५ एवं नाहर, पूरनचन्द, पूर्वोक्त, भाग–२ लेखाङ्क १३२३
१४५.	१५३२	वैशाख ·· ··· ।	अमररत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की पंच-तीर्थी प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ देरासर, डभोई	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग १, लेखाङ्क ५१
१४६.	१५३३	माघ सुदि ५ रविवार	देवरत्नसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग–२, लेखाङ्क ३०८
१४७.	१४३५	माघ सुदि ५ शुक्रवार	आनन्दप्रभसूरि	वासुपूज्यस्वामी की प्रतिमा का लेख	जैन देरासर, गेरीता	वही, भाग १, लेखाङ्क ६७१
१४८.	१५३५	वैशाख सुदि ६ सोमवार	अमररत्नसूरि	वासुपूज्यस्वामी की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, चाणस्मा	वही, भाग–१ लेखाङ्क ११४
१४९.	१५३५	आषाढ़ सुदि २ मंगलवार	अमररत्नसूरि	कुंथुनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर गेरीता	वही, भाग—१, लेखाङ्क ६६६
१५०.	१५३६	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	अमररत्नसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, पाडीव सिरोही-राजस्थान	नाहर, पूरनचन्द, पूर्वोक्त, भाग–२ लेखाङ्क २०९१
१५१.	१५३६	पौष बदि···गुरुवार	सिंहदत्तसूरि	नमिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	बड़ा मंदिर, सीहोर	नाहर, पूरनचन्द, पूर्वोक्त, भाग २, लेखाङ्क १७३७, एवं विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त लेखाङ्क ४६७

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

१५२.	१५३६	माघ सुदि ५ शुक्रवार	पं० उदयरत्न	पंचतीर्थी प्रतिमा	जैन मंदिर, बडावली	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-१, लेखाङ्क ९८
१५३.	१५३७	पौष सुदि ९ रविवार	सिंहदत्तसूरि के पट्टधर सोमदेवसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	कोठार पंचतीर्थी-२ शत्रुञ्जय	मुनिकंचनसागर, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २३५
१५४.	१५३७	माघ सुदि ५ शुक्रवार	सिंहदत्तसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभजिनालय, जानीशेरी, बड़ोदरा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क १५६
१५५.	१५४२	चैत्र वदि ८ मंगलवार	आनन्दप्रभसूरि के पट्टधर मुनिरत्नसूरि	विमलनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, घोघा	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ४८२
१५६.	१५४२	वैशाख सुदि १ गुरुवार	जिनचन्द्रसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, बड़ोदरा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखाङ्क ९५
१५७.	१५४२	वैशाख सुदि २ गुरुवार	श्रीसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	दादापार्श्वनाथ जिनालय, नरसिंह जी की पोल, बड़ोदरा	वही, भाग-२ लेखाङ्क १३६
१५८.	१५४२	वैशाखसुदि १० गुरुवार	जिनचन्द्रसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, चौकसीपोल, खंभात	वही, भाग २, लेखाङ्क ८०६
१५९.	१५४३	वैशाख वदि १० शुक्रवार	जिनचन्द्रसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, सेठ वाडो, खेड़ा	वही, भाग-२, लेखाङ्क ४३२
१६०.	१५४३	वैशाख वदि १० शुक्रवार	जिनचन्द्रसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथमुख्य बावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखाङ्क ५१६

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

१६१.	१५४४	फाल्गुन सुदि २ शुक्रवार	विवेकरत्नसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	जैनदेरासर, सौदागर पोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग–१, लेखाङ्क ८२४
१६२.	१५४४	—	जिनचन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	घर देरासर, बड़ोदरा	वही, भाग १, लेखाङ्क २४९
१६३.	१५४६	माघ वदि १३	विवेकरत्नसूरि	स्तम्भलेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	वही, भाग–२ लेखाङ्क ३२१
१६४.	१५४६	माघ सुदि १३	विवेकरत्नसूरि	चन्द्रप्रभस्वामी की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, गीपटी, खंभात	वही, भाग–२ लेखाङ्क ७०६
१६५.	१५४७	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	अमररत्नसूरि	वासुपूज्यस्वामी की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, डीसा	नाहर, पूरनचन्द, पूर्वोक्त, भाग–२, लेखाङ्क २१०६
१६६.	१५४७	वैशाख वदि ६ शुक्रवार	विवेकरत्नसूरि	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, बड़ोदरा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग–२, लेखाङ्क ८५
१६७.	१५४७	पौष वदि ६ रविवार	अमररत्नसूरि	सुविधिनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क–३०६
१६८.	१५४७	पौष वदि १० बुधवार	अमररत्नसूरि	सुविधिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, पाटन	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग १, लेखाङ्क २२८
१६९.	१५४७	माघ सुदि १३ रविवार	अमररत्नसूरि के पट्टधर श्रीसूरि	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	बड़ा मंदिर, कातर ग्राम	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखांक, ४९६
१७०.	१५४८	वैशाख सुदि २ शनिवार	जिनचन्द्रसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, चौकसीपोल खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ८३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७१	१५४८	वैशाख सुदि ३	सोमरत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	प्रतापसिंह जी का मंदिर, रामघाट, वाराणसी	नाहर, पूरनचन्द-पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४२३
१७२.	१५४९	आषाढ़ सुदि ३ सोमवार	विवेकरत्नसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय बोलपीपलो, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग–२, लेखांक ११३९
१७३.	१५५२	माघ वदि ८ शनिवार	सोमरत्नसूरि	सुमतिनाथ की पंच-तीर्थी प्रतिमा का लेख	मनमोहनपार्श्वनाथ जिनालय, मीयागाम	वही, भाग–२, लेखांक २७६
१७४.	१५५२	वैशाख सुदि ३	सोमरत्नसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभजिनालय, भोंपरापाडो, खंभात	वही, भाग–२ लेखांक–८९४
१७५.	१५५४	फाल्गुन सुदि ··· ।	विवेकरत्नसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग–२ लेखांक ४६६
१७६	१५५५	ज्येष्ठ सुदि ९ रविवार	अमररत्नसूरि के पट्टधर सोमरत्नसूरि	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा का लेख	बृहद्खरतरगच्छ का उपाश्रय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, लेखांक २४८५
१७७	१५५६	वैशाख सुदि १३ रविवार	सोमरत्नसूरि	मुनिसुव्रत की चौबीसी प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, दाहोद	विनयसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ८८७
१७८.	१५५९	वैशाख सुदि २	विवेकरत्नसूरि	अभिनन्दनस्वामी की चौबीसी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, पादरा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ८
१७९.	१५६०	वैशाख सुदि ३ शुक्रवार	विवेकरत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, राधनपुर	मुनिविशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ३२१

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

१८०.	१५६०	वैशाख सुदि ३ बुधवार	भावसागरसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	सीमंधरस्वामी का देरासर, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १२३६
१८१.	१५६४	फाल्गुन वदि ५ रविवार	आणंदसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनलय, बीजापुर	वही, भाग–१ लेखांक ४३९
१८२.	१५६६	माघ सुदि ५ सोमवार	शिवकुमारसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, गीपटी खंभात	वही, भाग–२, लेखांक ७१०
१८३.	१५६७	वैशाख सुदि ३ बुधवार	सोमरत्नसूरि	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	पद्मप्रभजिनालय,	वही, भाग–१, लेखांक ६२४
१८४.	१५६९	वैशाख सुदि ९ शुक्रवार	सोमरत्नसूरि	आदिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, जयपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग–२, लेखांक १२१६
१८५.	१५७०	पौष वदि ५ रविवार	शिवकुमारसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, बड़ोदरा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १००
१८६.	१५७१	चैत्र वदि २ गुरुवार	आनन्दरत्नसूरि	वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, वडनगर	वही, भाग–१, लेखांक ५५२
१८७.	१५७१	चैत्र वदि २ गुरुवार	सोमरत्नसूरि	अभिनन्दन स्वामी की चौबीसी प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, लखनऊ	नाहर, पूरनचन्द— पूर्वोक्त, भाग–१ लेखांक १५७७
१८८.	१५७१	चैत्र वदि ७ गुरुवार	सोमरत्नसूरि	वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा का लेख	जैनदेरासर, गेरीता	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ६७०
१८९.	१५७३	वैशाख सुदि ६ गुरुवार	सोमरत्नसूरि	वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, खेड़ा	वही, भाग २, लेखांक ४१४

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

१९०.	१५७३	फाल्गुन सुदि २ रविवार	अमररत्नसूरि के पट्टधर सोमरत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बीजापुर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त-भाग-१, लेखांक ४३३
१९१.	१५७५	माघ सुदि ६ गुरुवार	आनन्दरत्नसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, बड़ा बाजार, कलकत्ता	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १११
१९२.	१५७५	माघसुदि ५ गुरुवार	मुनिरत्नसूरि के पट्टधर आनन्दरत्नसूरि	पद्मप्रभ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	पद्मावती देरासर, बीजापुर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ४२१
१९३.	१५७६	माघसुदि ९ शनिवार	मुनिरत्नसूरि के पट्टधर आनन्दरत्नसूरि	चन्द्रप्रभस्वामी की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, सुल्तानपुरा, बड़ोदर,	वही, भाग २, लेखांक १९५
१९४.	१५७७	माघ सुदि १३ गुरुवार	हेमरत्नसूरि	शोतिनाथ की प्रतिमा का लेख	कोठार पंचतीर्थी-४ शत्रुञ्जय	मुनि कंचनसागर, पूर्वोक्त, लखांक २३७
१९५.	१५७८	माघ वदि ५ गुरुवार	विवेकरत्नसूरि	धर्मनाथ की चतुर्मुख प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, भरुच	मुनिबुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक २९४
१९६.	१५७८	माघ वदि ५ गुरुवार	विवेकरत्नसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	वही, भाग-२ लेखांक ३३७
१९७.	१५७८	माघ सुदि ४ गुरुवार	विवेकरत्नसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय, मेहतापोल, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक १७१
१९८.	१५७९	वैशाख सुदि ५ सोमवार	विवेकरत्नसूरि	शीतलनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ३३६

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

१९९.	१५७९	फाल्गुन सुदि ५ सोमवार	शिवकुमारसूरि	शीतलनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, भ्रामरा ग्राम	मुनि जयन्तविजय, आबू-भाग ५, लेखांक १८२
२००.	१५७९	फाल्गुन सुदि ५	शिवकुमारसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय कडाकोटडी, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ६१५
२०१.	१५८१	माघ सुदि ५ गुरुवार	सोमरत्नसूरि	मुनिसुव्रत की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, थराद	लोढ़ा, दौलतसिंह-पूर्वोक्त, लेखांक २४७
२०२.	१५८३	ज्येष्ठ सुदि ९ शुक्रवार	मुनिरत्नसूरि के पट्टधर आनन्दरत्नसूरि	श्रेयांसनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, राधनपुर	मुनि विशालविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ३४२
२०३.	१५८४	वैशाख वदि ४	शिवकुमारसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ३४८
२०४.	१५८४	वैशाख सुदि ४	शिवकुमारसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, झुंडाल	वही, भाग १, लेखांक ७७५
२०५.	१५८६	माघ वदि ५	उदयरत्नसूरि	शीतलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	देरी न० ७१।२ पंचतीर्थी, शत्रुञ्जय	मुनिकंचनसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ४५२
२०६.	१५८७	पौष वदि ६ रविवार	सिंहदत्तसूरि के पट्टधर शिव-कुमारसूरि	वासुपूज्यस्वामी की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभजिनालय, सुल्तानपुर, बड़ोदरा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक १९३
२०७	१५८७	माघ वदि ८ गुरुवार	उदयरत्नसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	सीमन्धरस्वामी का जिनालय, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १२१६

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

२०८.	१५८७	माघ वदि··· गुरुवार	उदयरत्नसूरि	विमलनाथ की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, ईडर	वही, भाग १, लेखांक १४७७
२०९.	१५८७	माघ वदि ८ गुरुवार	उदयरत्नसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, लाडोल	वही, भाग १, लेखांक ४६८
२१०.	१५९१	वैशाख वदि ६ शुक्रवार	संयमरत्नसूरि	वासुपूज्यस्वामी की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, ऊंडीपोल, खंभात	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग–२, लेखांक ६७३
२११.	१५९९	ज्येष्ठ सुदि १०	संयमरत्नसूरि विनयमेरुसूरि	आदिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	जैन देरासर, सौदागर पोल, अहमदाबाद	वही, भाग ६, लेखांक ८६०
२१२.	१५९९	ज्येष्ठ सुदि ११ रविवार		आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, (कोचरों में), बीकानेर	नाहटा, अगरचन्द- पूर्वोक्त, लेखांक १५७७
२१३.	१६१०	चैत्रसुदि १५ बुधवार	उदयरत्नसूरि के पट्टधर सौभाग्यरत्न-सूरि के परि-वार के हर्षरत्न उपाध्याय, पं० गुणमंदिर, माणिकरत्न, विद्यारत्न, सुमतिराज आदि		विमलवसही, आबू	मुनि जयन्तविजय, आबू, भाग–२, लेखांक १९४
२१४.	१६१२	वैशाख सुदि ६ बुधवार	संयमरत्नसूरि	संभवनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ देरासर, राधनपुर	मुनिविशाल विजय, पूर्वोक्त ३५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१५	१६४३	फाल्गुन सुदि ५ गुरुवार	संयमरत्नसूरि के पट्टधर कुलवर्धनसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	संभवनाथ जिनालय, पादरा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग–२, लेखांक ११
२१६.	१६६७	वैशाख वदि ७		शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग–२, लेखांक ६१०
२१७.	१६६७	वैशाख वदि ७	कुलवर्धनसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, कुंभारवाडो, खंभात	वही, भाग–२ लेखांक ६४९
२१८.	१६८३	ज्येष्ठ सुदि ६ गुरुवार	कुलवर्धनसूरि	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, कनासानो पाडो, पाटन	वही, भाग–१ लेखांक ३६१

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि आगमिकगच्छ १३वीं शती के प्रारम्भ अथवा मध्य में अस्तित्व में आया और १७वीं शती के अन्त तक विद्यमान रहा। लगभग ४०० वर्षों के लम्बे काल में इस गच्छ में कई प्रभावक आचार्य हुये, जिन्होंने अपनी साहित्योपासना और नूतन जिन प्रतिमाओं की प्रतिष्ठापना, प्राचीन जिनालयों के उद्धार आदि द्वारा पश्चिमी भारत (गुजरात-काठियावाड़ और राजस्थान) में श्वेताम्बर श्रमणसंघ को जीवन्त बनाये रखने में अति महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह भी स्मरणीय है कि यह वही काल है, जब सम्पूर्ण उत्तर भारत पर मुस्लिम शासन स्थापित हो चुका था, हिन्दुओं के साथ-साथ बौद्धों और जैनों के भी मन्दिर-मठ समान रूप से तोड़े जाते रहे, ऐसे समय में श्वेताम्बर श्रमण संघ को न केवल जीवन्त बनाये रखने बल्कि उसमें नई स्फूर्ति पैदा करने में श्वेताम्बर जैन आचार्यों ने अति महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

विक्रम सम्वत् की १७वीं शताब्दी के पश्चात् इस गच्छ से सम्बद्ध प्रमाणों का अभाव है। अतः यह कहा जा सकता है कि १७वीं शती के पश्चात् इस गच्छ का स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त हो गया होगा और इसके अनुयायी श्रमण एवं श्रावकादि अन्य गच्छों में सम्मिलित हो गये होंगे।

वर्तमान समय में भी श्वेताम्बर श्रमण संघ की एक शाखा त्रिस्तुतिकमत अपरनाम बृहद्सौधर्मतपागच्छ के नाम से जानी जाती है, किन्तु इस शाखा के मुनिजन स्वयं को तपागच्छ से उद्भूत तथा उसकी एक शाखा के रूप में स्वीकार करते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org